शासकीय लापरवाहियों की देन है प्रदूषण, नियंत्रण बोर्ड व एनजीटी तुरन्त बंद कर दिये जाने चाहिये

फ़रीदाबाद (म.मो.) अक्टूबर-नवम्बर माह, जो मौसम परिवर्तन का समय होता है तो यकायक प्रदूषण में बढोतरी नजर आने लगती है। यही समय होता है धान कटाई का भी। धान के बाद गेहूं बुआई के लिये शीघ्रातिशीघ्र खेत खाली करने के लिये कुछ किसानों को मजबूरन थोड़ी-बहुत पराली जलानी भी पड़ती है। अधिकांश किसान इसे जलाने की बजाय पशु चारे के रूप में इस्तेमाल भी करते हैं। इसके बावजूद प्रदूषण का सारा ठीकरा किसान के पराली दहन पर फोड़ दिया जाता है। उसके खिलाफ़ फौजदारी-मुकदमे दर्ज होते हैं, भारी जुर्माने लगते हैं और तरह-तरह से इसे प्रताड़ित किया जाता है।

लेकिन और अब कहीं कोई पराली का तिनका नहीं जल रहा और उसके बावजूद दिल्ली तथा एनसीआर के वायुप्रदूषण में कहीं कोई कमी नहीं आ रही। वायु गुणवत्ता का स्तर 300-400 तक बना रहता है। जब कभी अच्छी तेज हवा चल जाय अथवा बारिश हो जाय तो कुछ समय के लिये वायु गुणवत्ता में अच्छा-खासा सुधार हो जाता है। परन्तु ये सुधार बहुत ही अस्थाई होता है क्योंकि वायुप्रदूषण के मूल स्रोत तो ज्यों के त्यों ही प्रदूषण का उत्सर्जन करते रहते हैं, जो वायु-वेग से कुछ समय के लिये लुप्त हो जाता है।

वायु प्रदूषण के नाम पर नियंत्रण बोर्ड तथा एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल) जैसी दुकानें खोल कर सरकार जनता को यह दिखाना चाहती है कि वह प्रदूषण से मुक्ति दिलाने के लिये कितने भारी-भरकम प्रयास कर रही है। वास्तव में ये उक्त दोनों दुकानें प्रदूषण को घटाने वाला कोई काम नहीं कर रहीं। ये कुछ कर रही हैं तो केवल धन उगाही का काम कर रही हैं। कुछ धन सरकारी खजाने में तो कुछ धन इनकी जेबों में चला जाता है। प्रदूषण की रोक-थाम के नाम पर जो ये दोनों महकमे खड़े कर रखे हैं, इतना काम तो इलाके के थानेदार व तहसीलदार भी कर सकते हैं।

सर्वविदित होने के साथ-साथ **'मज़दूर मोर्चा'** अनेकों बार प्रकाशित कर चुका है कि प्रदूषण के मुख्य स्रोत सड़कों से उड़ने वाली धूल, वाहनों से निकलने वाला धुआं खास तौर पर जाम के कारण निकलने वाला धुआं, बिजली की अपर्याप्त आपूर्ति के चलते जनरेटरों के चलने से वायु प्रदूषण बेतहाशा बढ़ता है। घरेलू एवं औद्योगिक गैस के बेतहाशा बढते भाव के चलते लोगों को जो वैकल्पिक ईंधन जलाना पड़ता है वह भी एक बड़ा प्रदूषण स्रोत है। अक्सर देखा जाता है कि गरीब बस्तियों में जब शाम को चुल्हे जलते हैं तो धुएं के गुबार छा जाते हैं। यदि घरेलू गैस के दाम उनकी पहुंच में हों तो वे काहे को धुआं उगलने वाला ईंधन जलायें? इसके अलावा जगह-जगह कूड़ा जलाने खासतौर पर स्क्रैप जलाने से जो धुआं उठता है वह बहुत ही खतरनाक होता है।

उक्त बनाये गये दोनों महकमे प्रदूषण के स्रोतों को रोकने-थामने के लिये न कभी कुछ कर सके और न ही कभी कुछ कर सकेंगे। दरअसल इसमें उनके करने लायक कुछ है भी नहीं। यदि सरकार को जनता के स्वास्थ्य की थोड़ी सी भी चिन्ता होती तो वह खुद ही प्रदूषण के इन स्रोतों को कभी का बंद कर चुकी होती। परन्तु सरकार जनता को बेवकूफ़ बनाने के लिये तथा यह दिखाने के लिये कि वह प्रदूषण नियंत्रण के लिये कितना काम कर रही है, उक्त दोनों विभाग कायम करके निश्चिंत है। उसे इस बात से कोई लेना-देना नहीं कि उसकी इस नाटकबाजी से कितने ही लोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों के शिकार होकर बेमौत मर रहे हैं। दूसरी ओर जनता को भी इस गंभीर विषय की ओर ध्यान देने की कोई फुर्सत नजर नहीं आ रही, वह भी नेताओं की रैलियों में तथा बाबों की भक्ति में ज्यादा व्यस्त रहना पसंद करती है।

पुलिस के आशीर्वाद से सड़कों पर कार सवार स्कूली बच्चों का हुड़दंग जारी रहेगा

सड़क पर हुड़दंग करते बिगड़े रईसजादे

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते कई वर्षों से स्कूल की फेयरवैल पार्टी के दिन बिगड़े नाबालिग रईसजादे हराम की कमाई का बहुत ही भोंडे व खतरनाक ढंग से प्रदर्शन करते आ रहे हैं। लेकिन इस बार थाना सेन्ट्रल पुलिस ने इसका संज्ञान लिया। दरअसल जो संज्ञान पुलिस को स्वत: पहल करके ले लेना चाहिये था, वह उसे एक वीडियो वायरल होने पर लेना पड़ा।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार सेक्टर 14 स्थित मानव रचना स्कूल के छात्र-छात्रायें बड़ी-बड़ी महंगी कारों में सवार होकर काफिला बनाकर सेक्टरों की सड़कों पर बहुत ही खतरनाक ढंग से घूम रहे थे। कोई बोनट पर बैठा था तो कोई छत में से निकल रहा था तो कोई खिड़कियों से बाहर लटक रहा था। करीब बीसियों कारों का यह काफिला सड़कों पर बहुत ही खतरनाक तरीके से चल कर लोगों को भयभीत कर रहा था।

इन सेक्टरों के लिये यह कोई नई बात नहीं थी। ऐसा काफिला तमाम सेक्टरों की पुलिस चौकियों व पीसीआर जिप्सियों के सामने से बेखौफ़ होकर गुजरता रहता है। इस बार किसी ने सड़कों पर हुई इस हुड़दंगबाजी का वीडियो वायरल कर दिया तो थाना सेन्ट्रल ने वीडियो के आधार पर करीब आठ कारों की पहचान करके, उन्हें नोटिस जारी करके थाने में तलब किया। कहने की जरूरत नहीं कि गाड़ियों को चलाने वाले सभी नाबालिग बिना ड्राइविंग लाइसेंस के ही ड्राइविंग कर रहे थे।

पुलिस ने तो केवल गाड़ियों के नम्बर देख कर उनके मालिकान को तलब किया था। जानी-मानी बात है कि कोई भी मां-बाप यह नहीं मानेगा कि ड्राइविंग उनके बच्चे कर रहे थे। इस काम के लिये वे अपने ड्राइवर को ही पेश करेंगे।

इस बावत एसएचओ थाना सेंट्रल दिलीप सिंह से पूछने पर उन्होंने बताया कि कुछ गाड़िया आईडेंटीफाई कर ली गई हैं और उन्हें बुलाया जा रहा है। ताज्जुब है कि सोमवार 16 तारीख को भेजे गये नोटिसों के बावजूद अभी तक किसी पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है। भरोसेमंद सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार कोई भी कार्रवाई होने वाली नहीं है। नोटिस भेज-भेज कर सबको तलब तो किया जा रहा है लेकिन उचित सौदेबाजी के बाद सबको छोड़ दिया जायेगा। इसके लिये थाने वाले बड़े अफसरों की आड़ लेते हुए कहते हैं कि उनके आदेश हैं, बच्चे हैं, कोई बात नहीं वार्निंग देकर छोड़ दो। जाहिर है कि अगले साल नये बच्चे आकर इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए सड़कों पर हुड़दंग मचाना जारी रखेंगे।

मोटरवाहन एक्ट के मुताबिक यदि नाबालिग बच्चा गाड़ी चलाता हुआ पकड़ा जाये तो गाड़ी मालिक का चालान करके 25000 रुपये जुर्माना वसूला जायेगा और तीन साल तक की कैद भी हो सकती है। इतना ही नहीं नाबालिग ड्राइवर के विरुद्ध भी जुयेनाइल एक्ट के तहत मुकदमा भी चलाया जायेगा। कानून में यह सख्ती सड़क अपराधों को रोकने के लिये की गई है लेकिन इसी सख्ती के बूते पुलिस विभाग ने अपनी दुकानदारी के भाव कहीं अधिक बढ़ा दिये हैं।

सड़क सुरक्षा के नाम पर 1559 चालान, 7.54 लाख जुर्माना ही काफी है अपनी पीठ थपथपाने के लिये

फ़रीदाबाद (म.मो.) स्थानीय यातायात पुलिस ने 11-17 जनवरी को सड़क सुरक्षा सप्ताह के रूप में मनाया। इस दौरान तमाम तरह के वाहनों के 1559 चालान करके उनसे 7.54 लाख रुपये बतौर जुर्माना करके जो इतना बड़ा काम शहर की ट्रैफ़िक पुलिस ने किया है उसके लिये ट्रैफिक के डीसीपी नीतीश कुमार अग्रवाल तथा एसीपी विनोद कुमार अपनी पीठ थपथपाते नजर आये।

क्या सड़क सुरक्षा एवं ट्रैफिक नियंत्रण का काम केवल किसी सप्ताह विशेष अथवा पखवाड़े विशेष के लिये ही निर्धारित होना चाहिये, क्या यह काम 7X24 नहीं होना चाहिये? ट्रैफिक पुलिस का इतना भारी-भरकम अमला क्या केवल इस तरह के सप्ताह मनाने भर के लिये पाल रखा है? इस पूरे सप्ताह भर में भी शहर के किसी चौक अथवा सड़क पर जाम से कहीं कोई राहत नजर नहीं आई। रॉग साइड चलने वाले भी कहीं घटे नजर नहीं आये। अवैध वाहन, ट्रैक्टर ट्रॉले व टैंकर बेखौफ सड़कों पर दौड़ते नजर आये। रात में तो ये ट्रैक्टर बेहद खतरनाक रूप धारण कर लेते हैं। न इनके हेड लाइट होती है और न ही इनके आगे पीछे कोई रिफ्लेक्टर होते हैं। ड्राइविंग लाइसेंस तथा अन्य दस्तावेजों का तो इनके पास सवाल ही पैदा नहीं होता। फ़िर भी ये रात-दिन पूरी मस्ती से सड़कों पर दौड़ते हैं।

बाटा फ्लाइओवर पर शाम को अंधेरा होते ही इसलिये जबरदस्त जाम लग जाता है क्योंकि मथुरा रोड पर ऑटो-रिक्शाओं ने इस कदर कब्जा किया होता है कि कोई वाहन दिल्ली की ओर न बढ़ सके। इसी तरह नीलम फ्लाइओवर से उतरकर बल्लबगढ़ की ओर जाने के लिये इसलिये जाम लगता है कि वहां ऑटो वाले सवारियों का इंतजार करते रहते हैं। यह हालत तो तब है जब इन दोनों ही स्थानों पर एक-एक सब इंस्पेक्टर व अनेकों पुलिस तथा होमगार्ड तैनात रहते हैं। ये सब लोग कहां रहते हैं और क्या करते हैं डीसीपी साहब ही जानते होंगे।

जहां तक सवाल है वाहन चालकों को जागरूक करने का तो वे स्वत: ही पर्याप्त रूप से जागरूक हैं। जागरूक होकर निष्ठापूर्वक काम करने की जरूरत ट्रैफिक पुलिसवालों को है। इतने भारी-भरकम पुलिस अमले ने जितने चालान एक सप्ताह में किये हैं, इतने तो हर रोज नो पार्किंग के ही हो सकते हैं।

बेशक इस तरह के चालान कुछ ही दिन तक हो पायेंगे क्योंकि उसके बाद लोगों को समझ आ जायेगी कि सड़कें चलने के लिये होती हैं न कि पार्किंग के लिये।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।